चुने हुए शेर

हरेराम समीप

भूमिका

कुसुमलता सिंह

हरेराम समीप

जन्म : 13 अगस्त, 1951 ग्राम-मेख, जिला- नरसिंहपुर, मध्यप्रदेश ।

शिक्षा : स्नातक (वाणिज्य एवं विधि) साहित्यरत्न, उर्दू डिप्लोमा, उर्दू अकादमी, दिल्ली।

प्रकाशन : 31 पुस्तकें

ग़ज़ल संग्रह : 'हवा से भीगते हुए', 'आँधियों के दौर में', 'कुछ तो बोलो', 'किसे नहीं मालूम', 'इस समय हम', 'है तो सही', 'यह नदी खामोश है', 'समकाल की आवाज— चयनित ग़ज़लें'।

दोहा संग्रह : 'जैसे', 'साथ चलेगा कौन', 'चलो एक चिट्ठी लिखें', 'आँखें खोलो पार्थ', 'पानी जैसा रंग', 'पूछ रहा है यक्ष', 'उम्मीदों के द्वार'।

कविता संग्रह : 'मैं अयोध्या', 'शब्द के सामने', हाइकु संग्रह— 'बूढ़ा सूरज', कहानी संग्रह— 'समय से पहले'।

आलोचना ग्रन्थ : 'समकालीन हिन्दी ग़ज़लकार-एक अध्ययन' (चार खण्ड), 'हिन्दी ग़ज़ल की परम्परा', 'हिन्दी ग़ज़ल की पहचान'।

सम्पादन : 'समकालीन दोहा कोश', 'समकालीन महिला ग़ज़लकार', 'हिन्दी ग़ज़ल कोश' हिन्दी ग़ज़ल और डॉ. उर्मिलेश (परामर्श व सम्पादन सहयोग), चर्चित ग़ज़लकारों की 'चुने हुए शेर' पुस्तक श्रृंखला— श्री हस्तीमल हस्ती, बालस्वरूप राही, विज्ञान व्रत, कुमार प्रजापति, ओमप्रकाश यती, दिनेश सिंदल, कुलदीप सलिल, ज्ञानप्रकाश विवेक और माधव कौशिक के संग्रह प्रमुख हैं— 'कथाभाषा' (त्रैमासिक) पत्रिका का सम्पादन 1988 से 1992 तक।

अन्य : चर्चित दूरदर्शन धारावाहिक नक्षत्रस्वामी की पटकथा व गीत लेखन।

पुरस्कार : हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा महाकवि सूरदास सम्मान (2022), 5 राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त विशिष्ट पुरस्कार (2008)।

अन्य : 1. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय द्वारा दोहा और ग़ज़ल लेखन पर एम्फिल हेतु शोधसम्पन्न।

2. डॉ. वरुण कुमार तिवारी द्वारा संपादित शोधग्रंथ 'हरेराम समीप-व्यक्ति और अभिव्यक्ति' प्रकाशित 2009।

3. विभिन्न विश्वविद्यालयों के हिन्दी पाठ्यक्रम में इनकी पुस्तकें अनुमोदित।

4. जवाहरलाल नेहरु स्मारक निधि, तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली में कन्ट्रोलर ऑफ एकाउंट्स के पद से सेवानिवृत।

पता : 395, सेक्टर 8, फरीदाबाद-121006 (हरियाणा)

मोबाईल : 9871691313 • इमेल : hareramsameep1951@gmail.com

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस
नई दिल्ली
फ़ोन : 99682-88050, 82879-88726

ISBN 978-81-970121-6-7

₹ 160.00

चुने हुए शेर

हरेराम समीप

चुने हुए शेर

हरेराम समीप

भूमिका

कुसुमलता सिंह

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

I.S.B.N # 978-81-970121-6-7
4637/20, शॉप नं.-एफ-5, प्रथम तल, हरि सदन,
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
मो.: 9968288050, 9911866239
ई-मेल: littlebirdinfo21@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2024
© हरेराम समीप

आवरण चित्र : ककसाड़ टीम
मुद्रक : बालाजी प्रिंटर्स, दिल्ली

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए लेखक/प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

समर्पण

मेरी पत्नी, मेरी संगनी, मेरी मित्र
प्रिय गायत्री समीप
को...

हरेराम समीप के शेर : युगीन वास्तिकताओं और उनकी प्रवृत्तियों की सार्थक अभिव्यक्ति हैं

–कुसुमलता सिंह

हरेराम समीप ने अनेक विधाओं में रचना की है, जिनमें कविता, कहानी, दोहा, ग़ज़ल, हाइकु, निबंध और आलोचना की लगभग पैंतीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, लेकिन इस लेखन में हिंदी ग़ज़ल के प्रति इनका समर्पण विशेष उल्लेखनीय है। अब तक उनके छह ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित और चर्चित हुए हैं, जिनमें 'आँधियों के दौर में', 'कुछ तो बोलो', 'किसे नहीं मालूम', 'इस समय हम' और 'यह नदी खामोश है' प्रमुख हैं। एक प्रतिनिधि ग़ज़लों का संग्रह 'समकाल की आवाज' सीरीज़ से भी प्रकाशित हुआ है। ग़ज़ल-लेखन के साथ समीप ने हिन्दी ग़ज़ल आलोचना पर भी महत्वपूर्ण कार्य किया है। समकालीन हिन्दी ग़ज़लकार एक अध्ययन के चार खंडों में उन्होंने चर्चित ग़ज़लकारों के रचनात्मक वैशिष्ट्य का अध्ययन किया है। उन्होंने 'हिन्दी ग़ज़ल की परम्परा' और 'हिन्दी ग़ज़ल की पहचान' नामक दो ग्रन्थों की भी रचना की है। हिंदी ग़ज़ल की विकास यात्रा में जिन महत्वपूर्ण रचनाकारों का योगदान है, उनमें से एक नाम इनका भी है। इनकी ग़ज़लें अपनी वैचारिकी से हिंदी ग़ज़ल को जन-सम्मत और जन-सक्रिय भूमिका में ले आती हैं, साथ ही वह अपने समय के बारे में एक संज्ञान, एक मुक्ति, एक समर्पण का भरोसा देते हुए ऐसी दुनिया का विवरण देती हैं, जो सामाजिक और आध्यात्मिक अनुभव बन कर हमारे सामने आता है। सरल शब्दों में कहें तो इनकी ग़ज़लें एक ऐसी दुनिया को खोलती हैं, जहाँ आदमी अकेला तो है पर उसके अकेलेपन को दूसरे से जोड़ने का हुनर भी इन्हीं में है। ऐसा हुनर जो शून्य के प्रति प्रार्थना और अनुपस्थिति के साथ संवाद की तरह होता है। इसमें कोई संशय नहीं कि ग़ज़ल विधा के विकास में हरेराम समीप ने अपने

लेखन में परंपरा को बचाते हुए हर बार कुछ नया और मौलिक जोड़ कर किसी न किसी नए रूप में हिंदी ग़ज़ल की इस विधा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वर्तमान में होने वाले विकास नाम के छल को वे कैसे महसूस करते हैं, इसकी एक बानगी उनके इन शेरों में देखें जहाँ वे कहते हैं कि–

'फिर नहीं लौटीं इधर से, जो गईं पगडंडियाँ
कौन जाने फिर कहाँ, वो खो गईं पगडंडियाँ'

'नगर के ऊँचे मकानों का है परिंदा वो
किसी भी पेड़ से रिश्ता उसे नहीं मालूम'

इन शेरों को पढ़ते हुए जो सबसे पहला विचार आता है वह यह कि विज्ञान की कोख से जन्मे और पश्चिम के लोगों तथा पश्चिमीकृत अभिजात्यों द्वारा लागू की गई विकास वह प्रक्रिया है, जो विश्व की तमाम सांस्कृतिक विविधताओं को नष्ट करके उसे एकल संस्कृति में ढालना चाहती है, यह उस अनुमान पर आधारित है कि हर जगह ज़रूरतें एक सी होती हैं, कि हर कोई एक जैसा खाना खाए, एक ही प्रकार के घर में रहे, एक ही प्रकार के वस्त्र धारण करे, एक जैसी सीमेंट की इमारतें, एक जैसे खिलौने, एक जैसी फिल्में और टेलीविजन कार्यक्रम देखे यानी सबकी एक जैसी सोच हो। ये सब छल विकास के नाम पर दुनिया के कोने-कोने में प्रवेश कर गए हैं। यहाँ तक कि भाषा भी एक जैसी रहे क्योंकि आधुनिक समुदाय का अंग बनने के लिए अंग्रेजी सीखना आवश्यक है। यही वह लालच है, जो गाँव से शहर की ओर आने के लिए सबको आकर्षित करता है। पगडंडियाँ लोगों के चलने से बनती हैं। उन पगडंडियों पर लोग जाते हुए दिखाई तो देते हैं पर उनपर कोई लौटता नहीं है और वह पगडंडी धीरे-धीरे खो जाती है। सिर्फ वही नहीं खोती बल्कि खोती हुई पगडंडियाँ अपने साथ भाषा, परंपरा, खान-पान सभी को लुप्त-प्राय कर देती हैं। साथ ही इस शेर का एक पक्ष वह भाव भी है कि एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को हू-ब-हू वही नहीं देती, जो अपनी पूर्ववर्ती पीढ़ी से प्राप्त करती है। कुछ न कुछ छँटता रहता है, बदलता रहता है और पहले की पगडंडियाँ खोती रहती हैं और नए का निर्माण होता है। और ऐसे में इस कवि की दूरदृष्टि का यह कथन सच होता है कि विकास के छल की तिलस्मी ख़्वाहिशों की हवाएँ व्यक्ति को कैसे अपने में लपेट लेती हैं–

'तिलस्मी ख़्वाहिशों की ये हवाएँ
हमें ख़ुद में समोती जा रही हैं'

'शहर की आकाशचुम्बी सभ्यता ने ढँक लिया
गाँव की अमराइयों को आप क्या जानें हुज़ूर'

हरेराम समीप के लेखन को देखकर लगता है कि जैसे प्रारंभ में वे नवसृजन के अनेक रास्ते तलाशते हैं। अनेक विचारों को संकलित करने के लिए शब्द-शिल्प संवारने पर बहुत सारा काम करना होता है, लेकिन जैसे-जैसे लेखक आगे बढ़ता है, उसका अवबोध सुस्पष्ट होता जाता है। फिर वह उसी बात को एक ही वाक्य में कम-से-कम और नपे तुले शब्दों में कहने लगता है। हर परिपक्व रचनाकार की यह इच्छा होती है कि जो भी महत्वपूर्ण नहीं है उसे काट-छाँट दे। तब वह धीरे-धीरे एक सरल शैली की ओर बढ़ने लगता है। सरलता ही पूर्णता का पहला सार है। तब कहा जाता है कि रचनाकार रोज-ब-रोज परिपक्व और निर्लिप्त हो रहा है। हरेराम समीप इसी परिपक्वता और निर्लिप्तता के गुणों के साथ सचेतनधर्मी ग़ज़लकार हैं, जो युगीन वास्तिकताओं और उनकी प्रवृत्तियों को सार्थक अभिव्यक्ति दे रहे हैं। एक जागरूक कवि ही समकालीन समय के बहुआयामी विषयों को ग्रहण करते हुए आज के परिवेश में अन्तर्विरोधी विसंगतियों का ऐसा सरल सर्वेक्षण प्रस्तुत कर सकता है। यह बात इनकी रचनाओं में कैसे आती है, इसे देखने के लिए कुछ शेर लेते हैं—

'थोड़े-से वेतन में सोचूँ, ये होता, वो भी होता
मुझको दिन में ख़्वाब देखने की ये आदत ले डूबी'

'किसी से दोस्ती, ना दुश्मनी है
बताओ ये भी कोई ज़िन्दगी है'

'भले ही गाँव मेरा छिन गया शहर आकर
ज़हन में गाँव का अब भी मकान ज़िंदा है'

यह शेर यह प्रमाणित करते हैं कि एक रचनाकार कैसे अपने सर्वोत्कृष्ट रूप में एक रहस्यदर्शी बन जाता है। तब वह अपने शेर रचता नहीं बल्कि उन्हें अनुभूत करने लगता है, उसमें जीने लगता है। और यही बात हरेराम समीप को अपने समकालीन रचनाकारों से अलग करती है। यह सच है कि कोई भी शेर कितना भी विचारवान हो लेकिन उसकी विश्वसनीयता इस बात पर निर्भर होती है कि वह निजी अनुभूति से गुज़रा है कि नहीं। समीप की ग़ज़लों का स्त्रोत उसकी अनुभूति और उसका परिवेश है। ये सब गुण उनके व्यक्तित्व के पर्याय

हैं। तथाकथित साहित्यकारों की भाँति उनमें कथनी और करनी में भेद नहीं है। वे सिर्फ लिखने के लिए नहीं लिखते, रचने के लिए रचते हैं, इसलिए जहाँ वे अपनी रचनाओं के सहचर हैं, वहीं वे संवेदनाओं के किसी मोड़ पर हों पर अंततः लौटकर जीवन की तरफ ही आते हैं। रोजमर्रा की आमफहम चीजों की ओर—

'वक्त के इस शार्पनर में ज़िन्दगी छिलती रही
मैं बनाता ही रहा इस पैंसिल को नोकदार'

रचनाओं में विषय की विविधताओं के बावजूद बहुधा प्रकृति ही इनकी अन्तिम आश्रयस्थली होती है। जहाँ बादल, छाँव, शाखें, बगिया, नदी, पानी अपनी सशक्त मौजूदगी से दिखाई देते हैं। इसके साथ ही इनकी रचनाओं का स्थापत्य इनके द्वारा चयनित शब्दों में निहित है। समीप जी एक विशेष ऊर्जा से संपन्न होकर आते हैं और वे उन शब्दों का बिना किसी आडंबर और उक्ति-चमत्कार से परे उनका सीधा-सहज प्रयोग अपने लेखन में करते हैं, उससे यह साफ पता चलता है कि इन्हें अपने शब्दों की ताकत का पूरा अहसास है-

'साँसें बचा के रख तू ज़रा इन्तज़ार कर
दिन भर का कैश गिन रहा है डॉक्टर अभी'

'तेरहवीं के दिन बेटों के बीच बहस बस इतनी थी
किसने कितने ख़र्च किये हैं अम्मा की बीमारी में'

'मेरा लेखन बिलकुल जैसे धरती की हलचल से दूर
चाँद-जुलाहिन कात रही है, पोनी-पोनी ख़ामोशी'

'पत्ते थर-थर काँप रहे हैं, सहमी-सहमी शाखें हैं
बगिया में ठहरी है जैसे एक सलोनी ख़ामोशी'

इन शेरों में सलोनी ख़ामोशी या चाँद-जुलाहिन का जो प्रयोग हुआ है वह हिंदी ग़ज़ल में शायद ही इस खूबी के साथ हुआ हो। ऐसे शब्दों के प्रयोग पर 'हिंदी ग़ज़ल की भूमिका' में एक जगह शिवशंकर मिश्र कहते हैं कि 'ग़ज़ल की संरचना-कला एकदम अनूठी और कविता की अन्य विधाओं से एकदम अलग है। ग़ज़ल में शब्द अपनी ऐकांतिकता का विचार नहीं करते, बल्कि दूसरे शब्दों के जुड़ाव में ही अर्थ ग्रहण करते हैं। ग़ज़ल अपने में उतरने की कला नहीं, दूसरों में उतरने की कला है। इसीलिए उसमें आए शब्दों में एक खास लचीलापन होता है।'

वर्तमान समय का सबसे बड़ा संकट मंहगाई, अस्थिरता, असहिष्णुता, अनैतिकता, नैतिक मूल्यों का ह्रास या युद्ध नहीं है बल्कि वह आपसी अविश्वास है। हम इसी घोर अविश्वास के दौर से गुजर रहे हैं। उसी अविश्वास से पैदा हुआ नकलीपन या दिखावा हमारे परंपरागत मूल्यों को भी तहस-नहस कर रहा है। इसे समीप जी कैसे अपने शेरों में संभ्रांत तरीके से लाते हैं–

'बढ़ती हुई तनहाइयों में आशना कोई नहीं
वो है कहाँ कब आएगा, ये बोलता कोई नहीं'

ऐसे अनेक शेर उनकी सजग काव्य-दृष्टि, सकारात्मक सोच, ऐतिहासिक चेतना और आधुनिक बोध के परिचायक हैं। अपनी ग़ज़लों में समीप जी परंपरा का निर्वाह भी करते हैं और परंपराओं को तोड़ते भी हैं क्योंकि ऐतिहासिक चेतना में केवल अतीत का ही नहीं वरन् उसकी वर्तमानता का बोध भी शामिल है। मानवीय संभावनाओं के सजीव संकल्पन में संघटित हुई हरेराम समीप की ग़ज़लें और शेर एक नया विश्वास जगाते हैं। ज़िन्दगी की बुनियादी ज़रूरतों की सार्थक पड़ताल करती हुई इनकी ग़ज़लें जहाँ हमें संघर्ष के लिए उकसाती हैं वहीं पंक्तिबद्ध भी करती हैं। दुष्यंत के बाद जिन ग़ज़लकारों ने हिंदी ग़ज़ल को उसका स्वरूप और दिशा देने में उसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, उनमें से हरेराम समीप का नाम पहली पंक्ति में आता है। हिंदी में ग़ज़ल के पाठकों की संख्या बहुत बड़ी है। ग़ज़ल का सफर अभी जारी है। जैसा कि समीप जी स्वयं मानते हैं कि "प्रत्येक रचनाकार का सबसे बड़ा सरोकार यथास्थिति को बदलना है। मैं भी अपनी ग़ज़लों के जरिए जनमानस के मन में जीवन के प्रति आस्था, आत्मीय भाव और प्रगतिशील चेतना को जगाते रहना अपना अभीष्ट समझता हूँ।"

आज के समय संदर्भ में इनके ये चयनित शेर जहाँ हमें सोचने के लिए प्रश्न देते हैं वहीं हमसे संवाद भी करते हैं।

'ये अलग बात है कि हम लोग समझ पाए नहीं
वक़्त ने हमको ख़बरदार किया है तो सही'

पता : सी-54, रिट्रीट अपार्टमेंट,
20-आई.पी. एक्सटेंशन दिल्ली-110092
मो. : 9968288050

सोचना भी बंद है औ' बात करना भी मुहाल
इस समय का ये भयानक हादसा है दोस्तो!